अध्याय–पंचम

सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

अध्याय–5

सारांश निष्कर्ष एवं सुझाव

5.0.0 प्रस्तावना–

कक्षा पहली से आठवी तक की आरंभिक शिक्षा को आजकल अनिवार्य शिक्षा की अवधि के रुप में स्वीकार किया गया हैं। क्योंकि सांवैधानिक संशोधन ने शिक्षा को बुनियादी अधिकार में शामिल कर दिया। इस चरण में शुरुआत में बच्चे का पढ़ने ;लिखने और अंकगणित से औपचारिक परिचय होता हैं और इस चरण का अन्त जैविक–भौतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों के औपचारिक परिचय से होता हैं। आठ सालों की यह अवधि वह समय है। जब महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक विकास होता है। विवेक को आकार मिलता हैं। सामाजिक कौशलों और बुद्धि एवं काम के लिये जरुरी कौशलो और अभिवृतियों का भी विकास होता हैं।

5.1.0 शोध अभिकल्प–

प्रस्तुत शोध अध्ययन प्रयोगात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध के उद्देश्यों के आधार पर अध्ययन के विभिन्न पक्षों को उदघाटित करने से पहले से ही बनाई गई योजना की रुपरेखा को शोध अभिकल्प कहते हैं।
प्रस्तुत शोध की प्रकृति रुप से एक प्रयोगात्मक अध्ययन हैं। इस अध्ययन में एक समूह प्रयोगात्मक तथा एक समूह नियंत्रित अभिकल्प चुना जाता हैं।

5.2.0 शोध के चर–

शैक्षिक शोध में चर काफी महत्वपूर्ण स्थान हैं। चर से हमारा तात्पर्य है कि वह जिसका मान परिवर्तित होता रहता हैं।

स्वतंत्र चर–

रचनावाद उपागम

आश्रित चर–

विद्यार्थियों की उपलब्धि परीक्षण

तार्किक योग्यता परीक्षण

जनसंख्या –

कक्षा –सातवी ,म.प्र. के शासकीय स्कूलों के विद्यार्थी

5.3.0 प्रतिदर्श–

प्रतिदर्श किसी भी अनुसंधान की आधारशिला हैं यह आधारशिला जीवनी सुदृढ़ होगी। अनुसंधान के परिणाम उतने विश्वसनीय एवं परिगृह होंगे।

"Random Sampling tecnique"

5.4.0 शोध उपकरण–

शोध में जिस उपकरण का प्रयोग किया जाता हैं शोध उपकरण कहलाते हैं।

1 उपलब्धि परीक्षण	स्वनिर्मित
2 तार्किक योग्यता परीक्षण	एल. एन. दुबे
3 प्रतिक्रिया –मापनी	स्वनिर्मित

5.5.0 प्रयुक्त सांख्यिकी–

प्रदत्तो के विश्लेषण हेतु शोधकर्ता ने निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया।

मध्यमान , प्रमाणिक विचलन , एफ टेस्ट एवं प्रतिशतक ।

5.6.0 अध्ययन के उद्देश्य

1 रचनावाद उपागम की प्रभाविकता का अध्ययन करना–

(अ) कक्षा 7 के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि के सन्दर्भ में ।

(ब) कक्षा 7 के विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता के सन्दर्भ में।

(स) कक्षा 7 के विद्यार्थियों की रचनावाद उपागम के प्रतिक्रिया के सन्दर्भ में ।

2 कक्षा 7 के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि पर लिंग व उपागम के अन्तःक्रिया का अध्ययन करना ,जब गणित उपलब्धि के पूर्व परीक्षण के अंको को सहचर के रूप में लिए गये ।

3 कक्षा 7 के विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता पर लिंग व उपागम के अन्तःक्रिया का अध्ययन करना , जब गणित उपलब्धि के पूर्व परीक्षण के अंको को सहचर के रूप में लिए गये ।

5.7.0 अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1 कक्षा 7 के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि पर उपागम का कोई सार्थक प्रभाव नही है ,जब गणित उपलब्धि के पूर्व परीक्षण के अंको को सहचर के रूप में लिए गये ।

2 कक्षा 7 के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि का लिंग पर कोई सार्थक प्रभाव नही है ,जब गणित उपलब्धि के पूर्व परीक्षण के अंको को सहचर के

रूप में लिए गये।

3 कक्षा 7 के विद्यार्थियों की उपागम और लिंग एवं उनके अन्तःक्रिया का गणित उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नही है , ,जब गणित उपलब्धि के पूर्व परीक्षण के अंको को सहचर के रूप में लिए गये ।

4 कक्षा 7 के विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता पर उपागम का कोई सार्थक प्रभाव नही है ,जब तार्किक योग्यता पूर्व परीक्षण के अंको को सहचर के रूप में लिए गये ।

5 कक्षा 7 के विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता का लिंग पर कोई सार्थक प्रभाव नही है ,जब तार्किक योग्यता पूर्व परीक्षण के अंको को सहचर के रूप में लिए गये ।

6 कक्षा 7 के विद्यार्थियों की उपागम और लिंग एवं उनके अन्तःक्रिया का तार्किक योग्यता पर कोई सार्थक प्रभाव नही है , जब तार्किक योग्यता पूर्व परीक्षण के अंको को सहचर के रूप में लिए गये ।

5.8.0 परिकल्पनाओं का निष्कर्ष :

1 कक्षा 7 के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि पर उपागम का कोई सार्थक प्रभाव नही है ,जब गणित उपलब्धि के पूर्व परीक्षण के अंको को सहचर के रूप में लिए गये ।

निष्कर्ष : कक्षा 7 के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि पर उपागम का सार्थक प्रभाव पाया गया ।

मखवाना (2007) द्वारा रचनावाद उपागम द्वारा कक्षा 5 वी के विद्याार्थियों की गणित उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया, जिसमें निष्कर्ष थे–

रचनावाद उपागम द्वारा कक्षा 5वी के विद्याथियो की गणित उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

तरून्नुम ;2009 के द्वारा रचनावाद उपागम एवं परम्परागत विधि से उर्दु की उपलब्धि मे अन्तर देखा गया तथा यह पाया कि रचनावाद उपागम से उर्दु की उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया जाता हैं।

2 कक्षा 7 के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि का लिंग पर कोई सार्थक प्रभाव नही है ,जब गणित उपलब्धि के पूर्व परीक्षण के अंको को सहचर के रूप में लिए गये।

निष्कर्ष : कक्षा 7 के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नही पाया गया ।

3 कक्षा 7 के विद्यार्थियों की उपागम, लिंग एवं उनके अन्तःक्रिया का गणित उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नही है ,जब गणित उपलब्धि के पूर्व परीक्षण के अंको को सहचर के रूप में लिए गये ।

निष्कर्ष : कक्षा 7 के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि पर उपागम एवं लिंग उनके अन्तःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नही पाया गया ।

4 कक्षा 7 के विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता पर उपागम का कोई सार्थक प्रभाव नही है ,जब तार्किक योग्यता पूर्व परीक्षण के अंको को सहचर के रूप में लिए गये ।

निष्कर्ष : कक्षा 7 के विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता पर उपागम का सार्थक प्रभाव पाया गया

5 कक्षा 7 के विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता का लिंग पर कोई सार्थक प्रभाव नही है ,जब तार्किक योग्यता पूर्व परीक्षण के अंको को सहचर के रूप में लिए गये

निष्कर्ष : कक्षा 7 के विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नही पाया गया ।

6कक्षा 7 के विद्यार्थियों की उपागम और लिंग एवं उनके अन्तःक्रिया का तार्किक योग्यता पर कोई सार्थक प्रभाव नही है

निष्कर्ष : कक्षा 7 के विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता पर उपागम एवं लिंग उनके अन्तःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नही पाया गया ।

रचनावाद उपागम का विद्यार्थियों की प्रति , प्रतिक्रिया पर प्रभाव

प्रतिक्रिया मापनी द्वारा विद्यार्थियों की उपागम के प्रति क्या प्रतिक्रिया है इसे जानने के लिए इस मापनी का प्रयोग किया है जिसमें प्रयोगात्मक समूह पर रचनावाद उपागम से 10 पाठयोजना का अध्यापन किया गया मापनी में सकारात्मक एवं नकारात्मक 20 प्रश्नों को रखा ।विद्यार्थियों की रचनावाद उपागम के प्रति सराहनीय प्रतिकिया रहीं है।

5.9.0 शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध के आधार पर रचनावाद उपागम का उपयोग बहुआयामी हो रहा हैं। शोध के शैक्षणिक निहितार्थ को प्रमुख तीन भागो में विभाजित किया हैं--

शिक्षक के लिए –

1 रचनावाद उपागम गणित शिक्षण में शिक्षक को मदद करती हैं
2 रचनावाद उपागम से शिक्षक को गणित के अतिरिक्त विज्ञान , सामाजिक अध्ययन के विभिन्न भागों (भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र) आदि के शिक्षण में सहायता करता हैं।
3 शिक्षक रचनावाद उपागम से बच्चो में गणित के प्रति डर को कम कर सकता हैं।
4 शिक्षक बच्चो को वास्तविक ज्ञान से अवगत करा सकता हैं जो ज्यादा स्थायी होता हैं।
5 रचनावाद उपागम से शिक्षक गणित एवं अन्य विषयो के शिक्षण के लिए पाठ योजना बना सकते हैं।
6 रचनावाद उपागम को शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रयोग किया जा सकता हैं।
7 रचनावाद उपागम पर आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम डाइट द्वारा शिक्षको को सहायक पुस्तिका दी जाए।

विद्यार्थियों के लिए--

1 रचनावाद उपागम से विद्यार्थियो के अनुभव को प्राथमिकता दी जाती हैं जिससे विद्यार्थी ज्यादा बेहतर सीख सकते हैं।
2 रचनावाद उपागम से रटन्त पद्धति से मुक्ति मिल सकती हैं।
3 रचनावाद उपागम से गणित के संबन्ध में डर को कम किया जा सकता हैं।
4 रचनावाद उपागम से गणित में गतिविधि आधारित; कान्सेप्ट मेपिंग प्रोजेक्ट विधि आदि से विद्यार्थियो की रुचि बढ सकती हैं।
5 छात्रो को स्वतंत्र चिंतन का अवसर मिलता हैं।

अभिभावको के लिए–

1 रचनावाद उपागम से अभिभावक बच्चो को दैनिक जीवन के बारे में जानकारी दे सकते हैं।

2 रचनावाद उपागम से अभिभावक गणित विषय के अतिरिक्त अन्य विषय के बारे में जानकारी दे सकते हैं।

3 अभिभावक अपने बच्चो के व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं।

5.10. भावी शोध हेतु सुझाव–

1 रचनावाद उपागम से गणित विषय के उपभाग ;अंकगणित; क्षेत्रमिति; त्रिकोणमिति आदिद्ध पर शोध किया जा सकता हैं।

2 शोध में अन्य चरो को लेकर रचनावाद उपागम के प्रभाव को देखा जा सकता हैं।

3 शोध में अधिक न्यादर्शो को लेकर रचनावाद उपागम के प्रभाव को देखा जा सकता है।

4 रचनावाद उपागम से अन्य विषयों विज्ञान सामाजिक अध्ययन पर्यावरण हिन्दी, अंग्रेजी आदि पर शोध के प्रभाव को देखा जा सकता हैं।

5 रचनावाद उपागम से कक्षा 7 के अतिरिक्त छोटी कक्षाओ पर शोध किया जा सकता हैं।

6 शोध में अन्य चरो को लेकर रचनावाद उपागम के प्रभाव को देखा जा सकता हैं।

5.11 शोध का परीसीमांकन–

इस अध्ययन हेतु समस्या का सीमांकन निम्न हैं।

1. प्रस्तुत शोध को मध्यप्रदेश के बैंतूल जिले के आठनेर तहसील के सावॅगी ग्राम का स्कूल चुना गया हैं।
2. प्रस्तुत शोध में बैंतूल जिले के 1 सरकारी स्कूल को सम्मिलित किया।
3. अध्ययन में स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया।

4. प्रस्तुत शोध में कक्षा 7 वीं के मध्यप्रदेश के सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों को लिया गया।
5. प्रस्तुत शोध में कक्षा 7 वीं गणित विषय के उपविषय ज्यामितीय वृत्त ,त्रिभुज एवं परिमेय व्यंजक को लिया गया।